बिहार खादी संग्राम के अनमोल रत्न–ध्वजा प्रसाद साहू

डा0 मो0 तनवीर*

भारत की पराधीनता के दिनों में पूँजीवाद के बढ़ते प्रसार के विरूद्ध श्रम की प्रतिष्ठा तथा केन्द्रीय संचालनवाद के स्थान पर विकेन्द्रित स्वावलंबनवाद की स्थापना के उद्देश्य से महात्मा गाँधी ने खादी–आंदोलन का सूत्रपात किया। चर्खा उस आंदोलन का मुख्य आधार बना। पराधीनता की जंजीरों में जकड़े विवश, छटपटाते भारत को चर्खे के माध्यम से ही आजादी दिलाने को कृतसंकल्प थे बापू। उन्होंने स्पष्ट कहा था –

''भारत की पराधीनता बिना चरखे के दूर नहीं की जा सकती। भारत की आजादी का अर्थ होगा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा चर्खा चलाया जाना।''

महात्मा गाँधी ने खादी आन्दोलन के बारे में 'यंग इंडिया' एवं 'हरिजन' नामक पत्रिकाओं में कई लेख लिखे। सन् 1909 ई. में 'हिन्द स्वाराज्य' नामक पुस्तक में उन्होंने चर्खे के मूल स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा था –

''रमेश चंद्र दत्त का लिखा हुआ 'हिन्दुस्तान का आर्थिक इतिहास' पढ़कर मुझे रूलाई आ गयी। कल–कारखानों की बाढ़ ने हिन्दुस्तान को चौपट कर दिया है। मैनचेस्टर की करतूत से हिन्दुस्तान की कारीगरी लगभग नष्ट हो गयी है। ''कलें आधुनिक सभ्यता की खास निशानी हैं और मुझे तो साफ दिखाई दे रहा है कि यह महापाप है। बम्बई की मिलों में जो मजदूर काम करते हैं, वू पूरे गुलाम बन गये हैं, उनमें जो स्त्रियाँ काम करती हैं, उनकी दशा देखकर तो किसी का भी हृदय काँप उठेगा। अतः देश में मिलें बढ़ने पर खुश होने का कोई कारण नहीं है। मिल–मालिकों का हम तिरस्कार नहीं करते, यह तो संभव नहीं है कि एकाएक मिलें छोड़ देंगे, लेकिन उनसे हम यह प्रार्थना अवश्य कर सकते हैं कि वे उन्हें और न बढ़ायें परंतु मिल–मालिक ऐसा करें या न करें लोग खुद ही कल–कारखानों से बनी चीजों का इस्तेमाल करना बंद कर सकते हैं। यह भी संभव नहीं है कि ये बातें सभी आदमी एक साथ करने लगेंगे। पहले इरादा पक्का करने की जरूरत है, फिर उसके अनुसार काम होगा।''

महात्मा गाँधी के लिए पराधीन भारत के सात लाख गाँवों में चल रहे गरीबी और शोषण के नग्न तांडव को बंद करने का साधन ढूँढ़ना निहायत जरूरी

+2 शिक्षक श्री राधा कृष्ण केडिया, बालिका उच्च विद्यालय मुजफ्फरपुर।

हो गया था। गाँधी ने देखा कि र्सिफ कपड़े की खरीद के नाम पर प्रतिवर्ष लगभग साठ करोड़ रूपये इंग्लैंड चले जाते थे। उनकी स्पष्ट समझ थी कि बिना आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुए स्वाधीनता का कोई अर्थ नहीं है। उन्होंने देश की इस कठिन परिस्थिति को बड़ी गहराई से अनुभव किया तथा इसके समाधान के व्यावहारिक प्रतीक के रूप में चर्खे के रूप को प्रस्तुत किया।

1924 में एक प्रश्नोत्तर का उत्तर देते हुए गाँधी ने कहा था –

''मैं मशीनों के विरूद्ध नहीं हूँ लेकिन मशीनों के पीछे दीवाना होने के खिलाफ हूँ। जिससे मेहनत बच जाये, कम मजदूरों से काम चल जाये। लेकिन एक तरफ हजारों आदमी बेकार पड़े है और भूख से तड़प–तड़प कर गली–गली में प्राण दे रहे हैं और दूसरी ओर कम–से–कम मजदूर लगाने का प्रयत्न जारी है। मैं भी सम्पत्ति को केन्द्रस्थ करना चाहता हूँ लेकिन थोड़े से हाथों में नहीं, सबके हाथों में।''

महात्मा गाँधी ने महसूस किया कि गाँवों को स्वावलंबी बनाने के लिए चर्खे के अतिरिक्त दूसरा कोई समर्थ माध्यम नहीं हो सकता। कपड़े के मामले में आत्मनिर्भर बनाने में यह सबसे उपयुक्त साबित होगा। इस तरह श्रम–शोषण के विरूद्ध चर्खा सर्वथा एक नये जीवन–मान के रूप में, अहिंसा के प्रतीक के रूप में देश के सामने आया। चर्खा ग्रामीण–अर्थ रचना की रीढ़ सिद्ध हुआ। महात्मा गाँधी का तो मानना था कि ''चर्खा एक दैवी प्रेरणा है और खादी ईश्वरीय संदेश। बापू ने चर्खे के माध्यम से श्रमाधारित जीवन की श्रेष्ठता का संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उनकी दृष्टि में खादी हमारी धीरता की कसौटी है और उसके प्रति हमारा प्रकट किया जाने वाला विश्वास सत्य और अहिंसा में अपनी आस्था और श्रद्धा प्रकट करता है। खादी एक तपश्चर्या है, जो हमारे शुद्ध, पवित्र और अहिंसक जीवन का प्रतिनिधित्व करती है।'' महात्मा गाँधी के इन्हीं संदेशों ने खादी को जन–जन का लक्ष्य बना दिया तथा वह स्वतंत्रता आंदोलन के राष्ट्रीय पोशाक के रूप में आम लोगों की प्राथमिक आवश्यकता बन गयी। खादी मात्र वस्त्र नहीं थी वरन् एक सात्विक जीवन–शैली थी। महात्मा गाँधी के प्ररेणा से बिहार खादी समिति की स्थापना हुई। प्रारंभ के तीन वर्षो तक यह आंदोलन स्वदेशी के रूप में ही चला। यह वह समय था जब देश में महत्वपूर्ण क्रांतिकारी घटनाएँ घटीं। 'जालियांवाला बाग कांड' के उपरांत 01 अगस्त, 1920 में 'असहयोग आंदोलन' फिर 'सविनय अवज्ञा आंदोलन'। प्रारंभ में खादी का कार्य अखिल भारत कांग्रेस महासमिति के तत्त्वाधान में ही शुरू हुआ तथा देश के हरेक प्रांपत में सफलतापूर्वक चलाया जाता रहा।

बिहार में खादी आंदोलन को अपेक्षित प्रसार देने में महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी, समर्पित देशभक्त स्व. ध्वजा प्रसाद साहू का योगदान विशेष

उल्लेखनीय है। महात्मा गाँधी से ध्वजा बाबू का संपर्क 1917 ई. में उनकी चम्पाारण–यात्रा के दौरान मुजफ्फरपुर आगमन के क्रम में हुआ। निलहे अंग्रेजों के अंतहीन दमन से त्रस्त किसानों की व्यथा सुनकर उनके समाधान के स्थायी उपाय खोजने के लिए 1917 में गाँधी जब चंपारण आये, उस समय ध्वजा बाबू की सक्रियता और समर्पण भाव से वे विशेष प्रभावित हुए। महात्मा गाँधी से मिलने से पूर्व ध्वजा बाबू 1914 ई. में अनुशीलन पार्टी (गरम दल) के सदस्य थे तथा मुजफ्फरपुर, भागलपुर, मुंगेर एवं पटना इत्यादि शहरों से संगठन का कार्य करते थे। महात्मा गाँधी चम्पारण–यात्रा के क्रम में बहुत कम समय के लिए ही मुजफ्फरपुर रूके किन्तु तत्कालीन युवाओं के लिए वह अवधि अत्यंत प्रेरणादायी थी। गाँधी ने मुजफ्फरपुर के आश्रम–घाट में एक पेड़ लगाया था। ध्वाजा बाबू ने उसी पेड़ के नीचे अपने साथियों के साथ खादी का कार्य शुरू किया। बाद में देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद एवं पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे देश के बड़े नेताओं ने इसी स्थान पर चर्खा चला कर, सूत कातने का काम शुरू कर लोगों के बीच खादी–आंदोलन का प्रसार किया।

महान स्वतत्रता सेनानी, बिहार में खादी–आन्दोलन के जनक स्व. ध्वजा प्रसाद साहू का जन्म 1893 ई. में मुजफ्फरपुर जिले के औराई प्रखंड के रामखेतारी गांव में एक विपन्न किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता जुगल साहू का असमय ही निधन हो गया। उस समय ध्वजा बाबू की उम्र मात्र 8 वर्ष की थी। पिता के स्वर्गवास के बाद अत्यंत गरीबी की हालत में उन्हें जीवन गुजारना पड़। मेधावी थे इस कारण छात्रवृत्ति मिली और उसी से पढ़ाई जारी रख पाये, तथा वकालत तक की शिक्षा ग्रहण की। गाँधी के समर्पित अनुयायी होने के कारण तथा बिहार में खादी आंदोलन को अपेक्षित प्रसार देने के कारण उनके समकालिन उनमें महात्मा गाँधी की छवि देखा करते थे।

समर्पित गाँधीवादी नेता एवं स्वंतत्रता सेनानी ध्वाजा प्रसाद साहू ने 'बेकारी की समस्या का निदान तथा खादी ग्रामोद्योग' विषयक अपने एक आलेख में लिखा–

'भारत की विशाल जनसंख्या को चर्खे के माध्यम से खादी के साथ–साथ दूसरे ग्रामोद्योग जो प्रायः मर रहे थे, उन्हें भी जीवन मिला। खादी और ग्रामोद्योग देश की विशाल जनता को काम देकर उद्यमी बनाने के लिए आज भी उतना ही आवश्यक है, जितना पहले था।''

सन् 1919 में ध्वजा बाबू ने स्व. रामविनोद सिंह के साथ मिलकर मलखाचक (छपरा) में 'गाँधी कुटीर' नामक संस्था की स्थापना की किन्तु दो वर्ष बाद ही उन्हें गिरतार कर लिया गया। सन् 1923 में जे.बी. कृपलानी ने महात्मा

गाँधी की आज्ञा से ध्वाजा बाबू को उत्तर प्रदेश के गाँधी आश्रम बुला लिया, वहीं पर पंडित जवाहर लाल नेहरू से उनका संपर्क हुआ। 1924 में ध्वाजा बाबू बेलगाव कांग्रेस में सम्मिलित हुए जिसकी अध्यक्षता महात्मा गाँधी ने की थी और सन् 1925 में अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना में ध्वाजा बाबू को बुलाया गया। जहाँ महात्मा गाँधी के पूर्ण स्वराज के प्रस्ताव पर सबकी सहमति ली गई और एसेम्बलियों के बहिष्कार पर ध्वजा बाबू ने भी अपनी स्वतंत्रता–आंदोलन के क्रम में ध्वजा प्रसाद साहू ने पूरे देश का दौरा किया। उसी समय मुजफरपुर के आश्रम घाट में उन्होंने सत्याग्राही नमक बनाने का कार्य किया तथा 1930 में वे अंग्रेज सरकार द्वारा फिर गिरफ्तार कर लिये गये। 1930 से 1942 तक 12 वर्षो अवधि में खादी तथा ग्राम स्वावलंबन की दिशा में किया गया उनका कार्य विशेष उल्लेखनीय है, जिनमें उनके प्रमुख प्रेरक महात्मा गाँधी तथा डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद थे। भारतीय चरखा संघ की बिहार शाखा की स्थापना डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, ध्वाजा प्रसाद साहू एवं लक्ष्मी नारायण की देन है।

स्वाधीनता–प्राप्ति के उपरांत ध्वजा प्रसाद साहू का 1947 तक का समय समाज के कमजोर वर्गो के उत्थान, अनाथ बच्चों के कल्याण, कुष्ठ उन्मूलन एवं खादी के व्यापक–प्रचार–प्रसार में बीता। 1952 ई0 में आजाद भारत के प्रथम लोकसभा के चुनाव में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सीतामढ़ी (पुपरी) क्षेत्र से उम्मीदवारी देने के लिए ध्वाजा बाबू के समक्ष प्रस्ताव रखा, मगर ध्वजा बाबू ने यह कहा कि –

''मुझे लगता है कि मैं बिना लोकसभा की सदस्यता ग्रहण किये ही खादी और देश की बेहतर सेवा कर सकता हूँ।

1954 में देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने ध्वजा प्रसाद साहू को अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग आयोग का संस्थापक सदस्य नियुक्त किया। यू.एन. ढ़ेबर आयोग के अध्यक्ष बनाये और वी.एल.दस मेहता सदस्य चुने गये। 1955 में बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ की स्थापना हो जाने पर ध्वजा बाबू उसके मंत्री बनाये गये। 1957 में उन्होंने आचार्य बिनोवा भावे के भूदान–आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा उनके साथ बिहार के सुदूर गाँवों की यात्रा कर लोगों को भूदान की प्ररेणा दी। 1962 में चीन अक्रामण के बाद हुई तबाही में पुनर्वास के लिए बनायी गयी कमिटि के वे अध्यक्ष नियुक्त हुए तथा 'नेफा' तथा पूर्वोत्तर राज्यों का गहन दौरा कर भारतीय सेना के साथ मिलकर रिलीफ का कार्य किया।

स्व0 ध्वजा प्रसाद साहू महात्मा गाँधी के ऐसे सच्चे अनुयायी थे, जिन्होंने मन, वचन और कर्म से अंतिम साँस तक खादी के प्रचार–प्रसार को अपने जीवन

का परम लक्ष्य बनाये रखा। इस कार्य में किसी भी कार्यकर्त्ता के द्वारा बरती गयी थोड़ी सी शिथिलता उन्हें बर्दाशत नहीं थी। बाद के दिनों में खादी ग्रामोद्योग के बारे में लिखे गये एक पत्र में उन्होंने लिखा है –

''स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे नेताओं ने बड़े–बड़े कारखाने खोलकर देश को ऊपर उठाने में बहुत उत्साह दिखाया और खादी ग्रामोद्योग को गाँधी जी की सनक समझ कर चलाने में थोड़ी मदद तो की पर वह अपर्याप्त रही फलतः खादी और ग्रामोद्योग में शिथिलता आ गयी।

मगर उन्हें विश्वास था कि ''चूँकि मिलों द्वारा बेकारी का निवारण नहीं हो सकता, यह एहसास होने पर बड़े–बड़े अर्थशास्त्री भी इस ओर अवश्य ध्यान देंगे।''

उल्लेख करना यहाँ आवश्यक समझता हूँ। एक बार ध्वजा ने कहा था – खादी का कपड़ा बहुत जल्दी मैला हो जाता है, रोज धोना पड़त है इस पर गाँधी जी ने मुस्कुरा कर कहा था, – हाँ, खादी को मैल पसंद नहीं। बाद में राष्ट्रपिता ने ''खादीकोमैलपसंदनहीं' शीर्षक से हरिजन में एक लेख भी लिखा। राष्ट्रपिता ने यह वाक्य कहकर दरअसल खादीधारियों को अपने चरित्र की शुचिता का एक सूत्र दे दिया। उन्होंने देश के नेताओं को स्पष्ट संदेश दिया था कि वे खादी की तरह ही अपने राजनीतिक चरित्र की शुचिता अक्षुण्ण रखें। तभी देश का कल्याण संभव है।

आज ध्वाजा बाबू जैसे निष्कामकर्मयोगी नेताओं के व्यक्तित्व से हमें लगातार प्ररेणा ग्रहण करते हुए खादी को एक मिशन की तरह पूरी सक्रियता के साथ पुनः अपनाना होगा तभी वह अपना पूर्ववत विकास प्राप्त कर सकेगी।

सन्दर्भ सूची

1. बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास डा0 के0 के0 दत्त, खण्ड–I, II, III बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना 1668 द्वितीय संस्करण।
2. बिहार वासियों की जीवनी एवं उनकी चिन्ता ,धारा डॉ0 के0 के0 दत्त, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना 1678
3. बिहार में राष्ट्रीयता का विकास डॉ0 नागेन्द्र मोहन प्रसाद श्रीवास्तव तृतीय संस्करण, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
4. बिहार का खादी आंदोलन और उसका विकास लक्ष्मी नारायण स्मृति ग्रंथ संपादक–दिगम्बर झा, रामदयाल पांडे प्रकाशित बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ, 1689,
5. सत्याग्रह इन चम्पारण डा0 राजेन्द्र प्रसाद

6. महात्मा गांधी का बिहार
7. बाबू जनकधारी प्रसाद की आत्मकथा
8. समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र, श्री जयप्रकाश नारायण अनुवादक– श्री सच्चिदानंद, द्वितीय संस्करण बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना

****